Seat No. : _____

AJ-125

April-2015

M.A., Sem.-IV

HIN-511 : Hindi

(हिंदी रंगमंच)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 70**

1. (क) संस्कृत रंगदर्शन परंपरा की चर्चा कीजिए । **10**

अथवा

पाश्चात्य नाटकों का विकासक्रम बताइए ।

(ख) संक्षेप में उत्तर दीजिए : **4**

पारसी नाटक में मनोरंजन

अथवा

मेलो ड्रामा

2. (क) हिंदी नाटक के प्रकारों पर प्रकाश डालिए । **10**

अथवा

हिंदी रंगमंच की विशेषताएँ बताइए ।

(ख) संक्षेप में उत्तर दीजिए : **4**

भारतेंदु का रंगमंचीय चिन्तन

अथवा

हिंदी रंगमंच की भाषा

3. (क) 'अंधेर नगरी' एक प्रहसन है – युक्ति-युक्त चर्चा कीजिए । **10**

अथवा

'अंधेर नगरी' नाटक की रचना का उद्देश्य क्या है ? कथा द्वारा स्पष्ट कीजिए ।

(ख) संक्षेप में उत्तर दीजिए : **4**

'अंधेर नगरी' में सामाजिक चेतना

अथवा

'अंधेर नगरी' में संवाद

4. (क) पौराणिक प्रसंग को कल्पना का पुट देकर आधुनिक बोध कराने का उपक्रम धर्मवीर भारती ने 'अंधायुग' के माध्यम से किया है – इस कथन की चर्चा कीजिए। **10**

अथवा

गीति नाट्य स्वरूप के निकष पर 'अंधायुग' का मूल्यांकन कीजिए ।

(ख) संक्षेप में उत्तर दीजिए : **4**

'अंधायुग' शीर्षक की सार्थकता

अथवा

कृष्ण का चरित्र-चित्रण

5. सही-गलत की पहचान कीजिए : **14**

(1) आकाशवाणी या देववाणी नेपथ्य से ही गाई या कही जाती है ।

(2) 'प्रेमधन' ने प्रसंगानुसार पद्यों को भी नाटक का आवश्यक तत्त्व माना है ।

(3) संकलनत्रय नाटक का आवश्यक तत्त्व है ।

(4) यूनानी ड्रामा केवल सुखान्त ही होते हैं ।

(5) पारसी नाटककारों का उद्देश्य केवल भावों का संप्रेषण ही रहा ।

(6) 'मानसिक मोद' की संज्ञा नाटक के लिए लाला श्रीनिवास ने दी है ।

(7) नगर में प्रवेश करके 'महन्त' देखते है कि यहाँ हर चीज टके सेर मिलती है ।

(8) भारतेंदु के नाटक अलोकधर्मी है ।

(9) 'अंधायुग' के तीसरे अंक का शीर्षक गांधारी का शाप है ।

(10) भारतीजी 'अंधायुग' को अंधकार का गरजता महासागर कहते हैं ।

(11) शेक्सपीयर पारसी नाटकों के लिए प्रसिद्ध है ।

(12) अंधेर नगरी में वैंकुठ आखिर राजा ही जाते हैं ।

(13) नील देवी नाटक के रचनाकार भारतेंदु हैं ।

(14) अश्वत्थामा और वृद्ध याचक में संवाद होता है ।